

संसार में रहें किन्तु... हंस की तरह

हमें संसार में रहना है हंस की तरह। आप हंस को देखिए, हंस का कर्तव्य क्या है, वो क्या करता है, उसे समझें। हमें परमात्मा ने टाइल दिया है कि आप भी होली हंस की तरह विचरण करें। हंस का कर्तव्य ही है व्यर्थ और समर्थ को परखना। अर्थात् कंकड़ और रतन को अलग करना। उसी तरह होली हंस भी व्यर्थ और समर्थ को परखता और परिवर्तन करता है। चलते-चलते सारे दिन में कई ऐसी बातें हमारे सामने आती, कई ऐसे दृश्य भी दिखाई देते, व्यक्तियों से मिलना होता, सम्पर्क में आते और व्यर्थ कर्म भी दिखाई पड़ते। तो हमें इसी व्यर्थ को समर्थ कर समाप्त करना बहुत जरूरी है। नहीं तो व्यर्थ का किचड़ा जमा होते-होते उस दलदल का बोझ हमारे सिर पर बढ़ता रहेगा और हम दुर्बल होते रहेंगे। तब हम आने वाली बातों को, परिस्थितियों को और व्यर्थ को सही तरह से हैंडल करने में असक्षम होंगे। हमें हमेशा 'होली हंस' के टाइल को स्मृति में रखते हुए सारे दिन में होने वाले व्यर्थ के बोझ से मुक्त रहना है। अगर किसी ने कुछ बोल दिया और हमें फीलिंग आ गई, उसी व्यर्थ की फीलिंग से आपको और फीलिंग आती रहेगी और व्यर्थ फीलिंग की पैदाइश फास्ट होती जाएगी। चाहे कर्म हो, चाहे इर्ष्या भाव हो, चाहे नफरत हो, ये व्यर्थ की फीलिंग



राजयोगी व.क. गंगाधर

बहुत फास्ट होती है और हमें कमजोर करती है। और उसके आगे हम उस व्यर्थ को कभी सिद्ध करने के लिए बोलते हैं ना कि वो था ही झूठ और उस झूठ को फिर सिद्ध करने में और झूठ बोलते रहेंगे और उसके पीछे सारी एनर्जी हमारी खर्च होती जाती है। हम शक्तिहीन होते जाते हैं। सारे दिन में हमें ध्यान रखना होगा कि हम अपने अंदर क्या डाल रहे हैं, क्या भर रहे हैं और कौन-सी शक्ति जमा कर रहे हैं, क्योंकि वो शक्ति जैसी भी होगी वो हमारे कर्म में आएगी, हम रिस्पॉन्ड करेंगे, रिपैक्ट करेंगे। हमें ध्यान रखना है कि ऐसी चीजों को होली हंस की स्मृति से समझना भी है, परखना भी है और उसे अलग भी करना है। जैसे आजकल के साइंस के साधनों में भी व्यर्थ को कार्य में लगाकर अच्छा बना देते हैं, कई वेस्ट चीजों को बेस्ट में परिवर्तन कर देते हैं। ये साइंस तो हमारी ही रचना है ना! मनुष्य ने ही साइंस बनाया है ना! जब हमारी रचना में इतनी शक्ति है, फास्ट परिवर्तन करती है, जैसे देखो, खाद होती है ना, तो खाद बुरी चीज है लेकिन पैदा क्या करती है? खाद गंदी है लेकिन बदबू को बदलकर खुशबूदार फूल पैदा करती है, सब्जियां पैदा करती है। ये भी तो रचना है ना। रचना में इतनी शक्ति है तो हम भी गाली देने वाले की गाली को फूल बनाकर धारण करें। वो गुस्सा करे, हम शांति का शीतल जल दें। ये परिवर्तन शक्ति हमें धारण करनी है। होली हंस का कर्तव्य ही है खराब को श्रेष्ठ बनाना। आप कहेंगे कि ऐसा कैसे हो सकता है! उसने खराब ही बोला ना, खराब बात कही और बहुत खराब कही। लेकिन खराब को ही तो अच्छा बनाना है ना, अच्छे को तो अच्छा नहीं बनाना है। जब अच्छा नहीं है तभी तो अच्छे की जरूरत होती है। अच्छा ही है तो अच्छा बनाने की क्या जरूरत! तो शक्तिशाली बनकर खराब को अच्छा बनाने की शक्ति धारण करनी है। अच्छा बनाने के कर्तव्य को हमेशा याद रखकर, ये वस्त्र पहनकर ही हमें विचरण करना है। बुरी बात या वायुमण्डल का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ जाये, ये होली हंस का लक्षण तो नहीं हुआ ना!

कैसा भी वातावरण हो, कैसी भी वृत्ति हो, कैसी भी वाणी हो, कैसी भी दृष्टि हो, लेकिन होली हंस सबको होली बना देता है। सदा हमारे में ये पाँवर रहे और सदा ऐसे तीव्र गति का परिवर्तन करने की विधि आ जाये तो हम क्या बन जायेंगे, मालूम है? पवित्रता का फरिश्ता। पवित्रता का फरिश्ता का मतलब ही है किसी के प्रभाव में न आना। अपना कार्य किया और वह चला। फरिश्ता कभी किसी के वश नहीं होता। न विघ्न के, न व्यक्ति के। फरिश्ता यानी सेवा की और न्यारा। ऐसी स्थिति हमें सदा मेंटन रखनी है। तो अपने को चेक करना है, होली हंस बने हैं या बन रहे हैं? कब तक बनेंगे? कोई टाइम की हद भी है या नहीं है? कितने साल लगेगे? ऐसे अपने आप से बातें कर अपने कर्तव्य के बोध को स्पष्ट भी करना, साथ-साथ अपना भी है और दृढ़ भी करना है। ऐसा तीव्र पुरुषार्थ बनना है।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बांधेलियों को बाबा से मिलने की आकर्षण होती कि कहीं छुट्टी मिले तो हम बाबा से, भगवान से मिलने के लिए भागें। जैसे दुःख में सिमरण सब करे वैसे बांधेलियों पर बन्धन है तो वह जास्ती याद करती है।

हमने देखा है जिनको इस याद का, योग का अनुभव है, सहज ही दुनिया की सर्व बातों से उनकी बुद्धि हट जाती है और ऐसी प्रैक्टिस करने वालों की दृष्टि में शक्ति रहती है क्योंकि वृत्ति में एक बाबा ही रहता। स्वयं को बाबा के साथ कम्बाइन्ड देखते। जब तक इस योग की अनुभूति गहरी नहीं करेंगे तब तक शक्तियां नहीं मिलेंगी। जो भी पाँवस हैं वो इस योग साधना से मिलती हैं। इस साधना से माया पर विजयी बन सकते

हैं। ज्ञान हमारी पढ़ाई है, जिस पढ़ाई को बुद्धि को धारण करना है। और जितनी ज्ञान की गहरी प्वाइन्ट्स बुद्धि में धारण होगी उतना ही बुद्धि फिर दिल से बाबा की शुक्रिया का गीत गायेगी। और जितना याद की यात्रा करेंगे उतना अपने को वरदानों से भरपूर

देता है इसलिए योग में सचमुच यह अनुभव हो जैसे हम इस देह से उड़कर अपने अव्यक्त वतन में बाबा के पास पहुंच गये हैं। निराकारी दुनिया तो परमधाम है लेकिन अव्यक्त वतन, सूक्ष्म वतन यह हमारे संगम की विशेषता है। उसका हमें

लगन होती जो रात को नींद भी उड़ जाती और मन कहता बाबा के पास जाके बाबा से रूहरिहान करते रहें। कैसे बाबा लाइट के वतन में हमें लाइट रूप में ले जाता। खुद भी लाइट रूप बन जाओ तो बाबा लाइट रूप बन आप लोगों से मिलन मनावे। यही है

जब योग की अनुभूति गहरी हो... तब शक्तियां मिलें

अनुभव करेंगे। क्योंकि यह याद ही हमें वरदाता बाप से वरदान दिलाती, इसी से समीप हो जाते हैं। फिर दिल से गीत निकलता बाबा आपको पाकर हमने तो जहां पा लिया। ऐसी लगन वाले ही सच्चे आशिक बन माशुक की याद में रहते हैं।

हर एक हर घंटे, पाँच मिनट भी साइलेन्स की अनुभूति करे तो अनेक बातों पर विजय पाने की शक्ति आयेगी, जो बाबा कहते माया पर विजय पहनो, वह विजय तब होगी जब ज्ञान सहित योग में रहो। फिर माया नहीं आयेगी, बुद्धि यहाँ-वहाँ नहीं जायेगी। मुरली ज्ञान में पक्का कराती परन्तु सवरे का योग अशरीरी बनने में बहुत बड़ा बल

हरेक को अनुभव चाहिए, जहाँ से बाबा हमें मिलने आते हैं। तो इसके लिए जितनी-जितनी बुद्धि शुद्ध बनेगी, बाहर की बातों से अन्तर्मुख होगी, उतना ही बाबा की आकर्षण रहेगी। सचमुच हमें भगवान की आकर्षण हो रही है - यह अनुभव चाहिए। जैसे कई बार बाबा कहते कि बांधेलियों को बाबा से मिलने की आकर्षण होती कि कहीं छुट्टी मिले तो हम बाबा से, भगवान से मिलने के लिए भागें। जैसे दुःख में सिमरण सब करे वैसे बांधेलियों पर बन्धन है तो वह जास्ती याद करती हैं, आप लोग छुट्टेले हैं तो मस्त रहते हैं। अच्छा है मौज है, मस्त रहते, यह भले अच्छा है लेकिन लगन एक अलग चीज है। वह ऐसी

रूहानियत की यात्रा। तो सभी को ऐसी रूहानी यात्रा की रूचि रख बाबा से मिलन की अनुभूति करते रहना है। सदा बाबा की छत्रछाया के नीचे रहो तो रक्षक बाबा सदा रक्षा करता रहेगा। बाबा कहता बच्चे, तुम मेरी नजरों में छिप जाओ। बाबा की मुरली में है वो मेरे मीठे-मीठे नूरे रत्नों, यह किसने बोला? नूर माना आँखें। तो हम बाबा के नयनों के नूर हैं। इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिए! बाबा ने अपनी नजरों में हमें छिपा दिया है। बाकी तो दुनिया के खेल हैं, चाहे बीमारी है, आना है - जाना है, सर्विस करो उसमें आंधी भी आती, तूफान भी आते- यह वह सब होता परन्तु अपनी स्थिति स्थिर चाहिए।

हम बाबा के बच्चे ईश्वरीय सन्तान, ईश्वरीय फैमिली हैं। अपने को आत्मा समझना, देह के भान से परे रहना है, यह है पढ़ाई। यह भी वन्दरफुल बात है कि हम सब एक के बच्चे हैं। किसी का भी माँ-बाप दूसरा नहीं है। हम सब एक बाप के बच्चे हैं। वैसे



राजयोगिनी दादी जानकी जी

लौकिक में कहते हैं एक ब्लड है। फिर भाई-बहन का आपस में प्यार न हो तो क्या कहा जायेगा? रूहानी बच्चे हो, रूहों को कहा है तुम मेरे बच्चे हो। आत्मा फिर कहती है बाबा मैं आपका बच्चा हूँ। बच्चे-बच्चे कहके बाबा ने ब्राह्मण बना दिया। एडॉप्ट करके कहा तुम ब्राह्मण कुल के हो। यह अन्दर से संस्कारों में नशा हो, स्मृति हो। देखा गया है, नुमाशाम के समय किसी को भी योग में नींद नहीं आती है। तो यह नियम भी हमारा पक्का हो, खींच हो। इधर-उधर घूमने के बजाय, संगठन में आकर याद में बैठ जायें। संगठन के योग का सुख बहुत है। इसमें अलेबेले न हों। इस नियम में जो फायदा है, वह बहुत मदद करता है। अमृतवेले भी घड़ी सोने नहीं देगी। दिन में कार्य करते भी डिस्टैक रहकर काम करेंगे तो

में मुरली हो, दूसरे हाथ में स्वर्ग का गोला। हम दुनिया को स्वर्ग बना रहे हैं। स्वर्ग में रहेंगे पीछे पर संस्कार अभी बनायेंगे।

हमारे चेहरे और चलन को देखकर कहें कि ये तो स्वर्ग में रहते हैं।

हमारी रॉयल पर्सनैलिटी को देख दूरपरे भी पीछे-पीछे आने लगे। हम अपना बैग बैगेज पहले से खाना कर देते हैं। वहाँ पहुंचेंगे तो मिल जायेगा, साथ में क्यों ले जाऊं। जो संगम पर कर रहे हैं वह भविष्य के लिए कर रहे हैं। उसका उजूरा है सदा सन्तुष्ट। ऐसे नहीं कोई सीट मिले, कोई पोजीशन मिले, वो देवता कैसे बनेंगे!

कोई को बहाना बनाने की बड़ी आदत होती है। याद और सेवा में बहाना देने वाले को अधीनता जरूर होगी। उन्हें प्रकृति भी साथ नहीं देगी। कोई न कोई कर्मबन्धन निकल आयेगा, जो ऊंचा पुरुषार्थ करने नहीं देगा क्योंकि बहाना बनाने की आदत ने भाग्य बनाने से वंचित कर लिया। उसमें भी सूक्ष्म है इर्ष्या। भले कोई भाषण करे, लेकिन परिवार में मीठी जुबान न हो... तो कौन उन्हें पसन्द करेगा। कई हैं जो बर्तन मांजते भी सबसे

हम कुछ ऐसा करें जो बाबा हमें सर्टिफिकेट देवे कि हाँ, परिवर्तन मैंने देखा

अभी हम सबको यही दृढ़ लक्ष्य रखना है कि सदा ही स्वमानधारी रहें। स्वमान याद भी रहता है, ऐसे नहीं भूल जाते हैं लेकिन एक होता है सिर्फ ध्यान में रहना- हम यह हैं। एक होता है जैसे कोई जज है घर में भी जायेगा तो उसको यह तो याद है ना मैं जज हूँ, लेकिन जब जज कुर्सी पर बैठता है तो वो नशा एक और होता है। तो इसी रीति से हम साधारण स्मृति में तो रहते हैं क्योंकि बाबा ने भी तीन शब्द बोला व्यर्थ, निर्गेटिव और साधारण संकल्प। तो साधारण रीति से तो हम सब ब्राह्मण पवित्र जीवन वाले हैं, यह तो याद रहती ही होगी लेकिन उस नशे में रहना वो तब होगा जब हमारी स्मृति की सीट ठीक होगी, यानी स्मृति सदा इमर्ज होगी। आत्मिक स्मृति में रहकर हर कर्म करें।



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

तो यह खास अन्दरलाइन करने की बात है कि अपने स्मृति को इमर्ज रूप में रखें। अभी हम लोगों को यह बीच-बीच में अन्दरलाइन करनी चाहिए कि स्मृति इमर्ज रूप में है? क्योंकि कारोबार तो चलानी पड़ती है, कारोबार में कारोबार की भी स्मृति थोड़ी मिक्स हो जाती है। कहीं ज्यादा कहीं कम होती है, तो वो मिक्स होने से वो नशा थोड़ा कम होता है। अगर हम सब मिल करके संकल्प लें कि बाबा जो कहता है, जो देखने चाहता है, वह हम करके दिखायेंगे तो समानता और सम्पन्नता सहज आ जायेगी और हम सबसे बाबा प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेगा क्योंकि जब तक बच्चों की यह स्थिति अपने अन्दर प्रत्यक्ष नहीं है तो बाप कैसे प्रत्यक्ष होगा? हम कुछ ऐसा करें जो बाबा हमको सर्टिफिकेट देवे कि हाँ, परिवर्तन मैंने देखा। बाबा ने बच्चों से मिलन मनाने के लिए हाँ तो कर ली है, प्रोग्राम भी सबको मिल गया है लेकिन यह बाबा की बात याद रखनी चाहिए कि बाबा ने जो हमको संकल्प दिया कि मैं रिज़ल्ट देखना चाहता हूँ, सिर्फ फाइल में पत्र प्रतिज्ञा के नहीं एड करना चाहता हूँ। प्रत्यक्ष सम्पन्न और सम्पूर्ण मूर्ति देखना चाहता हूँ तो चलो हम फुल 100 नहीं लेकिन कुछ तो कदम बढ़ायें ना! जो बाबा कहे अच्छा चलो, 50 है, 60, 70 तक तो आवे, कुछ तो परिवर्तन बाबा देखे।

यह संकल्प करें और हम ब्राह्मणों के संकल्प में शक्ति तो है ही। अच्छे संकल्पों में अगर और एक्स्ट्रा दृढ़ता लायें तो क्या नहीं हो सकता है। लेकिन माया इसी में विघ्न डालने की कोशिश करती है। तो दृढ़ता को हम कमजोर नहीं करें, दृढ़ता का संकल्प लेके कुछ न कुछ परिवर्तन अपने में जरूर करें। वास्तव में तो परिवर्तन का लक्ष्य तो ऊंचा ही होना चाहिए। लेकिन हम फिर भी परिवर्तन शुरू करेंगे तो हो ही जायेगा और हमको ही बनना है और कौन आने हैं? तो जब हमें बनना ही है तो यह अगर सोचें, तो मैं समझती हूँ हो सकता है।

जिसमें नम्रता, धैर्यता और सच्चाई है उनका योग अच्छा लगता

थकावट नहीं होगी। थकते वह हैं जिनमें नम्रता, धैर्यता की कमी है। जो नम्रचित्त हैं उनके अनेक सहयोगी बन जाते हैं। जो धैर्यता और प्रेम से काम करते हैं, उन्हें कोई भी काम बड़ा नहीं लगता। उनका योग भी अच्छा होता है। जिसमें नम्रता की कमी है, वह वहाँ भी काम करते हैं, जिनके साथ भी करते हैं वो जल्दी थक जाते हैं। तो दोष किसका? अगर मेरे में नम्रता है, धैर्यता है, सच्चाई है तो अच्छा वातावरण बन जाता है। जो थकावट में काम करते हैं उन्हें योग में भी थकावट लगती है। सच्चाई, स्नेह और सहयोग से काम सहज हो जाता है।

जो दिल से काम नहीं करते वो अच्छा काम भी बिगाड़ देते हैं। अच्छा किया हुआ भी बिगाड़ देते हैं। उस समय पता नहीं पड़ेगा पर नुकसान बहुत होगा। वही हाथ सभी अंगुलियां मिलकर लड्डू बना सकती हैं, उसी हाथ से थपपड़ भी मार देते हैं। हमारे एक हाथ

बहुत स्नेह भरा सम्बन्ध रखते हैं। तो प्रालम्ब ज्यादा किसकी बनेगी? जो कम्पलेन करता है उसका भाग्य क्या होगा? अति सूक्ष्म है, सच्चा पुरुषार्थी न किसी की कम्पलेन करता, न उसकी कोई कम्पलेन करता।

हम सब मेहमान हैं, पर दूसरों की मेहमानवाजी करना भी अक्ल का काम है, जिसमें मेरेपन का अभिमान होगा वो मेहमान नहीं है। उसमें ट्रस्टीपन नहीं होगा। तो नुमाशाम के समय ऐसी स्थिति बनाके रखें। जो बच्चा, जो स्टूडेंट अच्छा होता है वो माँ-बाप टीचर की शिक्षा अनुसार चलता है। फिर जीवन भर याद रखता है कि यह मेरी माँ ने सिखाया, यह बाप ने सिखाया है। उनके प्रति अन्दर बहुत प्यार, रिगार्ड रहता है। वह अपने शिक्षक का नाम बाला करता है। सभी के मुख से निकलता है कि यह तो बिल्कुल एक्यूरेट है। तो बाबा हम सबको अपने समान महिमा योग्य बनाना चाहता है।